मन की बात - विशेष कार्यक्रम

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिका के राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा

प्रसारण तिथि – 27.01.2015 प्रसारण समय – रात्रि 8.00 बजे

(Hon'ble Shri Narendra Modi) :

मन की बात के स्पेशल कार्यक्रम में आज अमेरिका के राष्ट्रपति श्रीमान बराक ओबामा जी हमारे साथ हैं। पिछले कुछ महीनों से मन की बात मैं आपसे करता आया हूं । लेकिन आज देश के भिन्न–भिन्न कोनों से बहुत से लोगों ने सवाल पूछे हैं ।

लेकिन ज्यादातर सवाल राजनीति से संबधित हैं, विदेश नीति से संबंधित हैं, आर्थिक नीति से संबंधित हैं, लेकिन कुछ सवाल वो हैं जो दिल को छूने वाले हैं । और मैं मानता हूं कि आज हमें उन सवालों को स्पर्श करने से, हम देश के कोने–कोने में सामान्य मानव तक पहुंच पायेंगे । और इसलिये जो पत्रकार वार्ताओं में उठाये जाने वाले सवाल हैं, या जो मीटिंगों में चर्चा में आने वाले सवाल हैं, उसके बजाय जो दिल से निकलने वाली बाते हैं, उसको अगर हम दोहराते हैं, उसको अगर गुनगुनाते हैं तो एक नई ऊर्जा मिलती है। और उस अर्थ में मैं समझता हूं कि ये सवाल मेरी दृष्टि से ज्यादा अहम रखते हैं । आप लोगां को मालूम है, कुछ लोगों के मन में सवाल उठता है बराक का अर्थ क्या है ? तो मैं जरा ढूंढ रहा था कि बराक का अर्थ क्या है ? तो स्वाहिली भाषा, जो कि अफ्रीकन कन्ट्रीज में प्रचलित है । स्वाहिली भाषा में बराक का मतलब है, वह जिसे आशीर्वाद प्राप्त है । One who is Blessed । मैं समझता हूं ये अपने आप में बराक के नाम के साथ एक बहुत बड़ा तोहफा भी उनके परिवार ने उनको दिया है ।

अफ्रीकन कन्ट्रीज उबन्तु के प्राचीन विचार का अनुकरण करती आई है । ये विचार मानवता में एकजुटता का विचार है । और वे कहते हैं । am,

because we are मैं हूंए क्योंकि हम हैं । मैं समझता हूं सदियों का भी अन्तर है, सीमाओं का भी अन्तर है, उसके बावजूद भी वही भाव जो भारत में हम कहते हैं - वसुधैव कुटुम्बकम, वही भाव दूर–सुदूर अफ्रीका के जंगलों से भी उगते हैं । तो ये, कितनी बड़ी विरासत हम मानव जाति के पास है । जो हमें जोड़ती है । जब हम महात्मा गांधी की चर्चा करते हैं तो हमें हैनरी थोरो की बात याद आती है जिनसे महात्मा गांधी Disobedience सीखे थे । और जब हम मार्टिन लूथर किंग की बात करते हैं या ओबामा की बात करते हैं तो उनके मुंह से भी महात्मा गांधी का आदरपूर्वक उल्लेख सुनने को मिलता है । यही बातें हैं जो विश्व को जोड़ती हैं ।

आज बराक ओबामा हमारे साथ हैं । मैं पहले उनसे रिक्वेस्ट करूंगा कि कुछ हमें बतायें । बाद में, जो सवाल आए हैं,वो सवाल, जो मेरे लिये सवाल आये हैं उसका जवाब मैं दूंगा । जो बराक के लिये सवाल आये हैं उनका जवाब बराक देंगे । तो, I request President Barack Obama to say a few words.

(Hon’ble Shri Barack Obama):

Namaste! Thank you Prime Minister Modi for your kind words and for the incredible hospitality you have shown me and my wife Michelle on this visit and let me say to the people of India how honoured I am to be the first American President to join you for Republic Day; and I’m told that this is also the first ever Radio address by an Indian Prime Minister and an American President together, so we’re making a lot of history in a short time. Now to the people of India listening all across this great nation. It’s wonderful to be able to speak you directly. We just come from discussions in which we affirmed that India and the United States are natural partners, because we have so much in

common. We are two great democracies, two innovative economies, two diverse societies dedicated to empowering individuals. We are linked together by millions of proud Indian Americans who still have family and carry on traditions from India. And I want to say to the Prime Minister how much I appreciate your strong personal commitment to strengthening the relationship between these two countries.

People are very excited in the United States about the energy that Prime Minister Modi is bringing to efforts in this country to reduce extreme poverty and lift people up, to empower women, to provide access to electricity, and clean energy and invest in infrastructure, and the education system. And on all these issues, we want to be partners. Because many of the efforts that I am promoting inside the United States to make sure that the young people get the best education possible, to make sure that the ordinary people are properly compensated for their labour, and paid fair wages, and have job security and health care. These are the same kinds of issues that Prime Minister Modi, I know cares so deeply about here. And I think there's a common theme in these issues. It gives us a chance to reaffirm what Gandhi ji reminded us, should be a central aim of our lives. And that is, we should endeavour to seek God through service of humanity because God is in everyone. So these shared values, these convictions, are a large part of why I am so committed to this relationship. I believe that if the United States and India join together on the world stage around these values, then not only will our peoples be better off, but I think

the world will be more prosperous and more peaceful and more secure for the future. So thank you so much Mr. Prime Minister, for giving me this opportunity to be with you here today.

(Hon'ble Shri Narendra Modi): Barack the first question comes from Raj from Mumbai

उनका सवाल है, अपनी बेटियो के लिए आपके स्नेह के बारे मे सारी दुनिया जानती है। अपनी बेटियो को आप भारत के बारे मे अपने अनुभव कैसे बताएंगे? क्या आप उनके लिए कोई खरीददारी करने की योजना बना रहे है?

(Hon'ble Shri Barack Obama):

Well first of all they very much wanted to come. They are fascinated by India, Unfortunately each time that I have taken a trip here, they had school and they couldn't leave school. And in fact, Malia, my older daughter, had exams just recently. They are fascinated by the culture, and the history of India, in part because of my influence I think, they are deeply moved by India's movement to Independence, and the role that Gandhi played, in not only the non-violent strategies here in India, but how those ended up influencing the non-violent Civil Rights Movement in the United States. So when I go back I am going to tell them that India is as magnificent as they imagined. And I am quite sure that they are going to insist that I bring them back

the next time I visit. It may not be during my Presidency, but afterwards they will definitely want to come and visit.

And I will definitely do some shopping for them. Although I can't go to the stores myself, so I have to have my team do the shopping for me. And I'll get some advice from Michelle, because she probably has a better sense of what they would like.

(Hon'ble Shri Narendra Modi):

बराक ने कहा कि वो बेटियों को लेकर आयेंगे । मेरा आपको निमंत्रण है । राष्ट्रपति के कार्यकाल में भी आयें, या राष्ट्रपति कार्यकाल के बाद भी आयें । भारत आपका और आपकी बेटियों का स्वागत करने के लिये इच्छुक है ।

मुझे एक सवाल पुणे से सानिका दीवान जी ने पूछा है, महाराष्ट्र, पुणे से ! उन्होंने मुझे पूछा है आपने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ मिशन शुरू किया है । क्या उसमें भी आपने अमेरिका के प्रेजीडेन्ट ओबामा की मदद मांगी है क्या ?

सानिका आपने अच्छा सवाल पूछा है । भारत में सैक्स रेशियो के कारण एक बहुत बड़ी चिन्ता सता रही है । एक हजार लड़कों के सामने लड़कियों की संख्या कम है । और उसका मूल कारण लड़के और लड़की के प्रति देखने का हमारा जो रवैया है वो दोषपूर्ण है ।

प्रेजीडेन्ट ओबामा से मैं मदद मांगू या ना मांगू उनका जीवन ही अपने आप में एक प्रेरणा है । जिस प्रकार से वो अपनी दो बेटियों का लालन–पालन करते हैं । जिस प्रकार से अपनी दो बेटियों के लिये वो गर्व करते हैं ।

हमारे देश में भी, कई जगह प जब हमें कई लोगों से मिलना होता है , तो परिवार में उनको काई बेटा नहीं है सिर्फ बेटियां होती हैं । और इतने

गौरव से बेटियों को बड़ा करते हैं, इतना गौरव देते हैं वो ही सबसे बड़ी प्रेरणा है । मैं समझता हूं ये प्रेरणा ही हमारी ताकत है । और आपने सवाल पूछा है तो मैं कहना चाहूंगा कि बेटी बचाना, बेटी पढ़ाना य हमारा सामाजिक कर्त्तव्य है, सांस्कृतिक कर्त्तव्य है, मानवीय जिम्मेवारी है । इसको हमने निभाना चाहिये ।

बराक आपके लिये एक question है । *The second question for President Obama comes through e-mail: Dr. Kamlesh Upadhyay, a Doctor based in Ahmedabad, Gujarat - आपकी पत्नी मोटापे और डायबटीज जैसी स्वास्थ्य की आधुनिक चुनौतियों से निपटने की दिशा में व्यापक सामाजिक कार्य कर रही है । भारत में भी ये चुनौतियां तेजी से बढ़ रही हैं । क्या आप और फर्स्ट लेडी, आपका कार्यकाल राष्ट्रपति के नाते समाप्त होने के बाद, इन चुनौतियों से निपटने के कार्य के लिए भारत आएंगे ,जैसे बिल गेट्स और मिलिंडा गेट्स भारत में स्वच्छता को लेकर काम कर रहे हैं, आप भी डायबटीज और मोटापेपन के लिये काम करेंगे क्या?*

(Hon'ble Barack Obama):

Well, we very much look forward to partnering with organizations, and the government and non-governmental organizations here in India, around broader Public Health issues including the issue of obesity. I am very proud of the work that Michelle has done on this issue. We're seeing a world-wide epidemic of obesity, in many cases starting at a very young age. And a part of it has to do with increase in processed foods, not naturally prepared. Part of it is a lack of activity for too many children. And once they are on this path, it can lead to a life

time of health challenges. This is an issue that we would like to work on internationally, including here in India. And it is a part of a broader set of issues around global health that we need to address. The Prime Minister and I have discussed, for example, how we can do a better job in dealing with issues like pandemic. And making sure that we have good alert systems so that if a disease like Ebola, or a deadly flu virus, or Polio appears, it is detected quickly and then treated quickly so that it doesn't spread. The public health infrastructure around the world needs to be improved. I think the Prime Minister is doing a great job in focusing on these issues here in India. And India has a lot to teach many other countries who may not be advancing as rapidly in improving this public health sector. But it has an impact on everything, because if children are sick they can't concentrate in school and they fall behind. It has a huge economic impact on the countries involved and so we think that there is a lot of progress to be made here and I am very excited about the possibilities of considering this work even after I leave office.

(Hon'ble Shri Narendra Modi):

मुझे एक सवाल श्रीमान अर्जुन ने पूछा है । और बड़ा इन्टरेस्टिंग सवाल है । उन्होंने पूछा है कि मैंने व्हाइट हाउस के बाहर एक पर्यटक के रूप में आपकी एक पुरानी फोटो देखी है । जब आप बीते दिनों सितंबर में वहां गए तो कौन सी बात आपके दिल को छू गई ?

ये बात सही है कि मैं जब पहली बार अमेरिका गया था तो व्हाइट हाउस जाना तो हमारा नसीब में नहीं था । तो व्हाइट हाउस से दूर एक लोहे की बहुत बड़ी जाली लगी हुई है, तब, जाली के बाहर खड़े रह करके फोटा निकाली थी । पीछे व्हाइट हाउस दिखता है । और अब प्रधानमंत्री बन गय तो अब वो फोटो भी पॉपुलर हो गई । लेकिन तब मैंने कभी सोचा नहीं था कि मुझे भी कभी जिंदगी में व्हाइट हाउस में जाने का अवसर आयेगा । लेकिन जब मैं व्हाइट हाउस गया, एक बात ने मेरे दिल को छू लिया, और मैं ये कभी भूल नहीं सकता हूं । बराक ने मुझे एक किताब दी, वो किताब काफी मेहनत करके खोज के लाये थे । और Eighteen Ninety Four में वो किताब प्रसिद्ध हुई थी । स्वामी विवेकानन्द, जो मेरे जीवन की प्रेरणा हैं, वे शिकागो गये थे । वर्ल्ड रिलीजन कॉन्फ्रेन्स में गये थे । और वर्ल्ड रिलीजन कॉन्फ्रेन्स में जो भाषण हुए थे उसका वो कम्पाइलेशन था । वो किताब खोज करके मेरे लिये लाये थे । यानि वो घटना मेरे लिये दिल को छूने वाली थी । लेकिन उतना ही नहीं । उन्होंने वह किताब के पन्ने खोल–खोल के, क्या–क्या उसमें लिखा है वो मुझे दिखाया । मतलब कि वो पूरी किताब देख चुके थे । और इस गर्व के साथ मुझे कहा, कि मैं उस शिकागो से आता हूं जहां स्वामी विवेकानन्द आये थे । ये बातें मेरे मन को बहुत छू गयी थी । और मैं जीवन भर, मैं अपनी विरासत मानता हूं । तो कभी व्हाइट हाउस से दूर कहो खड़े रह करके फोटो निकालना, और फिर कभी व्हाइट हाउस में जा करके, जिनके प्रति मेरी श्रद्धा रही है, उनके जीवन की किताब प्राप्त करना, आप कल्पना कर सकते हैं कि दिल को कितना स्पर्श कर गया होगा ।

बराक आपके लिये एक Question है । Himani from Ludhiana, Punjab. Question is for you :

(Hon'ble Shri Barack Obama):

Well the question is "Did you both imagine you would reach the positions that you've reached today?"

And it is interesting, Mr. Prime Minister, your talking about the first time you visited White House and being outside that iron fence. The same is true for me. When I first went to the White House, I stood outside that same fence, and looked in, and I certainly did not imagine that I would ever be visiting there, much less living there. You know, I think both of us have been blessed with an extraordinary opportunity, coming from relatively humble beginnings. And when I think about what's best in America and what's best in India, the notion that a tea seller or somebody who's born to a single mother like me, could end up leading our countries, is an extraordinary example of the opportunities that exist within our countries. Now I think, a part of what motivates both you and I, is the belief that there are millions of children out there who have the same potential but may not have the same education, may not be getting exposed to opportunities in the same way, and so a part of our job, a part of government's job is that young people who have talent, and who have drive and are willing to work for, are able to succeed. And that's why we are emphasizing school, higher education. Making sure that children are healthy and making sure those opportunities are available to children of all backgrounds, girls and boys, people of all religious faiths and of all races in the United States is so important. Because you never

know who might be the next Prime Minister of India, or who might be the next President of United States. They might not always look the part right off the bat. And they might just surprise you if you give them the chance.

(Hon'ble Shri Narendra Modi):

Thank you Barack

ये सवाल हिमानी लुधियाना, पंजाब से मुझे भी पूछा है कि क्या आपने कभी इस पद पर पहुंचेंगे इसकी कल्पना की थी?

जी नहीं कभी कल्पना नहीं की थी । क्योंकि मैं तो जैसे बराक ने बताया बहुत ही सामान्य परिवार से आता हूं । लेकिन मैं बहुत लम्बे अरसे से सबको ये कहता आया हूं कि कुछ भी बनने के सपने कभी मत देखो । अगर सपने देखने हैं तो कुछ करने के देखो । जब कुछ करते हैं तो सन्तोष भी मिलता है और नया करने की प्रेरणा भी मिलती है । सिर्फ बनने के सपने देखते हैं और नहीं बन पाते हैं तो सिवाय निराशा कुछ हाथ नहीं लगता है । और इसीलिये मैंने जीवन में कभी कुछ भी बनने का सपना देखा नहीं था । आज भी कुछ बनने के सपने दिमाग में हैं ही नहीं । लेकिन कुछ करने के जरूर हैं । और भारत माता की सेवा करना, सवा सौ करोड़ देशवासियों की सवा करना , इससे बड़ा सपना क्या हो सकता है । वही करना है । मैं हिमानी का बहुत आभारी हूं ।

एक Question है बराक के लिये from Omprakash. Omprakash is studying Sanskrit at JNU. He belongs to Jhunjunu, Rajasthan. Om Prakash is convener of special centre for Sanskrit Studies in JNU.

(Hon'ble Shri Barack Obama):

Well this is a very interesting question. His question is, the youth of the new generation is a global citizen. He is not limited by time or boundaries. In such a situation what should be the approach by our leadership, governments as well as societies at large.

I think this is a very important question. When I look at this generation that is coming up, they are exposed to the world in ways that you and I could hardly imagine. They have the world at their fingertips, literally. They can, using their mobile phone, get information and images from all around the world and that's extraordinarily powerful. And what that means, I think is that, governments and leaders cannot simply try to govern, or rule, by a top-down strategy. But rather have to reach out to people in an inclusive way, and an open way, and a transparent way. And engage in a dialogue with citizens, about the direction of their country. And one of the great things about India and the United States is that we are both open societies. And we have confidence and faith that when citizens have information, and there is a vigorous debate, that over time even though sometimes democracy is frustrating, the best decisions and the most stable societies emerge and the most prosperous societies emerge. And new ideas are constantly being exchanged. And technology today I think facilitates that, not just within countries, but across countries. And so, I have much greater faith in India and the United States, countries that are open

information societies, in being able to succeed and thrive in this New Information Age; than closed societies that try to control the information that citizens receive. Because ultimately that's no longer possible. Information will flow inevitably, one way or the other, and we want to make sure we are fostering a healthy debate and a good conversation between all peoples.

(Hon'ble Shri Narendra Modi):

जो सवाल बराक को पूछा गया है ओमप्रकाश चाहते हैं कि मैं भी उस विषय में कुछ कहूं ।

बहुत ही अच्छा जवाब बराक ने दिया है । इन्सपायरिंग है । मैं इतना ही कहूंगा कि एक जमाने में, खास करके कॉम्युनिस्ट विचारधारा से प्रेरित लोग थे । वे दुनिया में एक आवाहन करते थे । और वे कहते थे वर्कर्स ऑफ द वर्ल्ड युनाइट । दुनिया के मजदूर एक हो जाओ । ऐसा एक नारा कई दशक तक चलता रहा था । मैं समझता हूं, आज की युवा की जो शक्ति है, आज की युवा की जो पहुंच है, इसको देखते हुए मैं यही कहूंगा कि यूथ, युनाइट द वर्ल्ड । युवको, दुनिया को एक करो । मैं समझता हूं, उनमें ये ताकत है और वे कर सकते हैं ।

अगला सवाल है सी.ए. पिकाशु मुथा । ये मुम्बई से पूछ रहे है । और उन्होंने मुझे पूछा है *आप किस अमेरिकन नेता से इन्सपायर्ड हैं* ?

वैसे जब छोटे थे तो कैनेडी की फोटो देखा करते थे हिन्दुस्तान के अखबारों में । बडो इम्प्रैसिव थी उनकी पर्सनेल्टी । लेकिन आपका सवाल है कि किसने इन्सपायर किया । मुझे बचपन में पढ़ने का शौक था । और मुझे बेन्जामिन फेन्कलिन का जीवन चरित्र पढ़ने का अवसर मिला था । 17सौ साल की समयकाल उनका । और वो अमेरिका के राष्ट्रपति नहीं थे

। लेकिन वो जीवन चरित्र इतना प्रेरक है । एक व्यक्ति अपने जीवन को बदलने के लिये समझदारी पूर्वक कैसे प्रयास करता है ।

नींद ज्यादा आती है तो नींद कम करने के तरीके क्या हो सकते हैं ?

ज्यादा खाने का मन करता है तो कम खाने की तरफ जाना है तो कैसे जाना है ?

काम करते करते अपने साथी लोग नाराज होते हैं, उनको लगता है कि देखो य कुछ करते ही नहीं है, मिलते ही नहीं हैं । तो इस समस्या का समाधान कैसे करना है ?

ऐसे–ऐसे छोटे–छोटे विषयों को उन्होंने अपनी बायोग्रॉफी में लिखा है । और मैं तो हर एक को कहता हूं कि हमने बैंजामिन फ्रेंकलिन के जीवन चरित्र को पढ़ना चाहिये । आज भी मुझे वो प्रेरक देता है । और बैंजामिन फ्रेंकलिन, एक बहुआयामी व्यक्तित्व था उनका । वे राजनीतिज्ञ थे, राजनीतिक विचारक थे, वो सामाजिक कार्यकर्ता थे, वो कूटनीतिज्ञ थे । और बहुत सामान्य परिवार से आये थे । पढ़ाई भी पूरी नहीं हुई थी । लेकिन उन्होंने आज भी अमेरिका के जीवन पर अपने विचारों की छवि छोड़ी हुई है । मुझे उनका जीवन सचमुच में प्रेरक लगा है । और मैं आपसे भी कहूंगा आप भी अगर उनका जीवन चरित्र पढ़ोगे, आपको अपने जीवन को ट्रांसफॉम करना है तो उसमें से रास्ता दिखाते हैं । और बहुत छोटी छोटी बातों का सहारा लिया है । तो मैं मानता हूं कि जितना मुझे प्रेरणा मिली है आपको भी मिलेगी ।

एक question है बराक के लिये मोनिका भाटिया का । मोनिका भाटिया ने बराक से सवाल पूछा है

(Hon'ble Shri Barack Obama) :

Well the question is "As leaders of two major economies, what inspires you and makes you smile at the end of a bad day at work?"

And that is a very good question. I say sometimes, that the only problems that come to my desk are the ones that nobody else solves. If they were easy questions, then somebody else would have solved them before they reached me. So there are days when it's tough and frustrating. And that's true in Foreign Affairs. That is true in Domestic Affairs. But I tell you what inspires me, and I don't know Mr. Prime Minister if you share this view - almost every day I meet somebody who tells me, "You made a difference in my life."

So they'll say, "The Health-Care law that you passed, saved my child who didn't have health insurance." And they were able to get an examination from a Physician, and they caught an early tumour, and now he is doing fine.

Or they will say "You helped me save my home during the economic crisis."

Or they'll say, "I couldn't afford college, and the program you set up has allowed me to go to the university."

And sometimes they are thanking you for things that you did four or five years ago. Sometimes they are thanking you for things you don't even remember, or you're not thinking about that day. But it is a reminder of what you said earlier, which is, if

you focus on getting things done as opposed to just occupying an office or maintaining power, then the satisfaction that you get is unmatched. And the good thing about service is that anybody can do it. If you are helping somebody else, the satisfaction that you can get from that, I think, exceeds anything else that you can do. And that's usually what makes me inspired to do more, and helps get through the challenges and difficulties that we all have. Because obviously we are not the only people with bad days at work. I think everybody knows what it is like to have a bad day at work. You just have to keep on working through it. Eventually you make a difference.

(Hon'ble Shri Narendra Modi):

सचमुच में बराक न मन की बात कही है । कि हम भी भले किसी पद पर क्यों न हों, हम भी इंसान हैं । ऐसी छोटी छोटी चीजें हमें प्रेरणा देती हैं । मेरा भी मन करता है, मैं एक घटना मेरे अपने जीवन की बताउं । मैं जीवन मं बहुत वर्षों तक एक प्रकार से परिव्राजक रहा । लोगों के घर में मुझे खाना मिलता था । कोई जो मुझे बुलाता था वो मुझे खिलाता था । एक बार एक परिवार मुझे बार बार कहता था कि आप मेरे घर खाना खाने आइये, लेकिन मैं जाता नहीं था । इसलिये नहीं जाता था कि वो एक बहुत गरीब परिवार था । और मुझे लगता था मैं उनके यहां भोजन के लिये जाउंगा तो उनपर बोझ बन जाउंगा । लेकिन उनका प्यार इतना था, उनका आग्रह इतना था, कि आखिकार मुझे झुकना पड़ा । और मैं उनके घर भोजन के लिये गया । जब भोजन के लिये हम बैठे तो, एक बहुत छोटी झोपड़ी जैसी जगह थी । तो उन्होंने मुझे बाजरे की रोटी और दूध दिया । उनका छोटा बच्चा उस दूध की ओर देख रहा था । ऐसा लगा कि जेस उस बच्चे ने कभी दूध देखा नहीं है । तो मैंने तुरन्त वो दूध का कटोरा

उस बच्चे को दे दिया । और उसने तुरन्त पल दो पल में उसको पी लिया । उसके घर के लोग बहुत नाराज हो गये थे कि उसने दूध क्यों पी लिया । और मैंने अनुभव किया, कि उस बच्चे ने शायद मां के दूध के सिवाय कभी भी दूध पिया नहीं होगा । और मुझे अच्छा खिलाने के इरादे से वो दूध ले आये थे । इस बात ने मुझे इतनी प्रेरणा दी, कि एक गरीब झुग्गी झोपड़ी में रहने वाला व्यक्ति, मेरे लिये इतनी चिन्ता करता है । तो मुझे अपना जीवन, ऐसे लोगों के लिये लगा देना चाहिये । तो यही बातें हैं जो प्रेरणा देती हैं । और बराक ने भी बहुत ही, एक सामान्य मन को क्या क्या लगता है हमारे सामने बताया है ।

मैं बराक का बहुत आभारी हूं, उन्होंने इतना समय दिया । और मन की बात सुनने के लिये मैं देशवासियों का भी आभारी हूं । मैं जानता हूं कि भारत में रेडियो हर घर पहुंचा हुआ है, हर गली पहुंचा हुआ है। और ये रेडियो मन की बात, स्पेशल मन की बात, ये आवाज हमेशा हमेशा गूंजतो रहेगी ।

मुझे एक विचार आया है, मैं आपके सामने रखता हूं । मेरी और बराक के बीच आज जो बात हुई है इसकी एक ई–बुक निकाली जाये । मैं चाहता हूं कि जो मन की बात को आर्गेनाइज करत हैं, ई–बुक निकालें । और मैं आपसे भी कहता हूं, कि आप जो श्रोताओं ने ये मन की बात सुनी है, तो आप भी जरूर इसमें पार्टिसिपेट कीजिए । और उसमें से जो बेस्ट हन्ड्रेड विचार मिलेंगे, उसको भी मेरी और बराक की इस किताब के साथ हम जोड़ेंगे और एक ई–बुक निकालेंगे । और मैं चाहता हूं कि आप लोग, टिवट्र हो, फेसबुक हो, ऑनलाइन कुछ लिखना चाहते हों, तो आप #YesWeCan, इस हैश टैग के साथ हमें लिखिये ।

- Eliminate Poverty - #YesWeCan
- Quality Healthcare to All - #YesWeCan
- Youth empowered with Education - #YesWeCan

- Jobs for All - #YesWeCan
- End to Terrorism - #YesWeCan
- Global Peace and Progress - #YesWeCan

मैं चाहता हूं कि इस टैग लाइन के साथ आप भी इस मन की बात सुनने के बाद अपने विचार, अपने अनुभव, अपनी भावना पहुंचाइये । उसमें से जो बेस्ट हन्ड्रड होगी, उसको हम सलेक्ट करेंगे, और मैंने और बराक ने जो बातें की हैं, उसकी किताब में उसको भी जोड़ देंगे । और मैं मानता हूं, सच में कि हम सबके मन की बात बन जायेगी ।

फिर एक बार बराक का बहुत बहुत आभार । आप सबका भी बहुत बहुत आभार । और 26 जनवरी के इस पावन पर्व पर, बराक का यहां आना मेरे लिये बहुत ही गर्व की बात है, देश के लिये गर्व की बात है ।

बहुत बहुत धन्यवाद ।